M. A. Semester - I
Philosophy CC - 03

Prof. Ragini Kumari
Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

# Theory of Knowledge of Plato
## (Part - I)

Plato की ज्ञान मीमांसा उसके पूर्ववर्ती दार्शनिकों जैसे प्रोटागोरस, सोफिस्टो तथा सुकरात आदि विचारकों की ज्ञान सम्बन्धी विचारधारा की प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न होती है। उसके ज्ञान मीमांसा के दो पक्ष है— नकारात्मक और भावात्मक। नकारात्मक पक्ष के अन्तर्गत वह अपने पूर्ववर्ती ज्ञान के दो सिद्धान्तों एक 'Knowledge is Perception' और दूसरा 'Knowledge is opinion' का खण्डन करता है और तत्पश्चात भावात्मक पक्ष के अन्तर्गत वह अपने 'ज्ञान सिद्धान्त' की स्थापना करता है जो सुकरात के ज्ञान सिद्धान्त का संशोधित रूप है।

Plato की ज्ञान मीमांसा के नकारात्मक पक्ष का उद्देश्य है कि जब ज्ञान के गलत सिद्धान्तों का खण्डन कर दिया जाएगा तो सत्य ज्ञान प्रकट हो जाएगा। अतः वह पहले प्रोटागोरस तथा सोफिस्टो के ज्ञान सिद्धान्त "Knowledge is perception" के खण्डन के लिए निम्नलिखित तर्क देता है—

(1) उक्त सिद्धान्त का सार यही रहा है कि प्रत्येक व्यक्ति विशेष (individual) के लिए जो सत्य है वह उसके लिए सत्य है किन्तु Plato के अनुसार इस सिद्धान्त को किसी भी हालत में हमारी बौद्धिक की धारणाओं के लिए सत्य नहीं माना जा सकता। यदि किसी को यह स्पष्ट हो कि अगले वर्ष वह न्यायधीश हो जाएगा तो यह मात्र कल्पना ही होगी, क्योंकि सम्भव है वह

व्यक्ति भविष्य में जेल के अन्दर बन्द हो जाय। अतः उक्त मत की सत्यता खण्डित नहीं होती।

(2) Plato के अनुसार उक्त सिद्धान्त में 'प्रत्यक्ष ज्ञान' को ही ज्ञान माना गया है किन्तु प्रत्यक्ष से तो व्याघातक निष्कर्ष निकलता है। कोई वस्तु पास से बड़ी किन्तु दूर से छोटी, किसी एक वस्तु को अपेक्षा भारी तो दूसरे से हल्की किसी रोशनी में सफेद, तो किसी में हरा और अँधेरे में रंगहीन दिख पड़ती है। अतः जब प्रत्यक्ष को ज्ञान है तो वस्तु के किस प्रत्यक्ष को सत्य माना जाय, यह स्पष्ट नहो होता, क्योंकि प्रत्यक्ष में व्याघातक निष्कर्ष मिलते हैं।

(3) Plato के अनुसार उक्त सिद्धान्त को मान लेने से सभी प्रकार की शिक्षा, व्यवस्था और प्रमाण आदि असम्भव होंगे, क्योंकि प्रत्यक्ष ही ज्ञान है तो एक बच्चे का ज्ञान उसके लिए सत्य होगा और ऐसी स्थिति में उसके लिए शिक्षक की शिक्षा व्यर्थ होगी और इस आधार पर प्रोटागोरस का सिद्धान्त भी खण्डित हो जाता है।

(4) Plato के अनुसार प्रोटागोरस प्रत्यक्ष को सत्य ज्ञान मानकर इस निष्कर्ष पर आता है कि मनुष्य सभी चीजों का मापदण्ड है किन्तु उसका यह मत इस मान्यता पर आधारित है कि मनुष्य जीव है परन्तु जीव तो जानवर भी होते हैं अतः वे भी प्रत्यक्षकर्त्ता होने के कारण मनुष्य के समान ही समस्त वस्तुओं की माप होंगे। किन्तु यह मत स्वयं प्रोटागोरस को भी मान्य नहीं होगा।

(5) Plato के अनुसार Protagoras (प्रोटागोरस) का उक्त सिद्धान्त आत्मव्याघाती है, क्योंकि इसकी मान्यता है कि व्यक्ति विशेष को जो सत्य प्रतीत होता है वह उसके लिए सत्य है अतः यदि किसी व्यक्ति को प्रोटागोरस का सिद्धान्त असत्य प्रतीत हो तो प्रोटागोरस को अपने सिद्धान्त को असत्य

मानना पड़ेगा। इन्द्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान व्यवहारिक (opinion) ज्ञान होते हैं।

(6) ज्ञान के प्रत्यक्ष मानने के सत्य की वस्तुनिष्ठता समाप्त हो जाती है और साथ ही यह सिद्धान्त सत्य असत्य के बीच भिन्नता को अर्थहीन बना देता है। एक प्रकार की वस्तु एक ही समय सत्य असत्य होती है। हमारे लिए यह सत्य तो दूसरे के लिए असत्य हो सकता है। अतः यह कहने में कोई अन्तर नहीं है कि एक ही प्रति सत्य असत्य दोनों ही है। इससे यह साबित होता है कि ज्ञान के प्रत्यक्ष को मानना संगत नहीं है।

(7) Plato का तर्क है कि प्रत्यक्ष ज्ञान में भी केवल ज्ञानेन्द्रियों पर आधारित नहीं होना पड़ता है। मान लिया जाए जब हम कहते हैं कि This is a book तो यह प्रत्यक्ष ज्ञान है लेकिन यदि ध्यान से देखें तब इसे भी शुद्ध प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं कहेंगे। सर्वप्रथम इस तरह के प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए हमें कागज के इस टुकड़े की तुलना कागज के दूसरे रंग के टुकड़े से करनी पड़ती है। इस प्रकार इस तरह के ज्ञान के लिए तुलना तथा वर्गीकरण करना पड़ता है लेकिन तुलना करने का काम और वर्गीकरण करने का काम हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ नहीं कर सकती, बल्कि इस तरह का ज्ञान बुद्धि के आधार पर होता है। इससे यह साबित होता है कि शुद्ध प्रत्यक्ष ज्ञान सम्भव नहीं है।

अतः Plato यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि ज्ञान न तो प्रत्यक्ष है, न विचार, बल्कि ज्ञान बुद्धि है।

W. T. Stace ने लिखा है " Knowledge must be full and complete understanding rational comprehension and not mere instinctive belief. It must be grounded on reason and not on faith ........ " (A Critical Hist. of Greek Philosophy) Page no. 181

इस प्रकार हम देखते हैं कि Plato न तो पूर्वमत को ज्ञान मानते हैं न ही विचार को, बल्कि इनके अनुसार ज्ञान का आधार बुद्धि है। इससे ऐसा लगता है कि Plato सुकरात के सिद्धान्त को स्वीकारते हैं। W. T. Stace ने लिखा है —

" ..... Plato adopts without alternation the Socratic that all knowledge is knowledge through concepts ....."

To be Continued —